JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मुंशी प्रेमचन्द का हिन्दी साहित्य में योगदान

सारिका शर्मा
शोधकर्ती
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय,रामगढ़, झारखण्ड

सार

प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को निश्चित दिशा प्रदान की है। प्रेमचन्द आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने अपने दौर में रहे हैं, बल्कि किसान जीवन की उनकी पकड़ और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। किसान जीवन के यथार्थवादी चित्रण में प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में अनूठे और लाजवाब रचनाकार रहे हैं। प्रेमचन्द का कथा साहित्य जितना समकालीन परिस्थितियों पर खरा उतरता है, उतना ही बहुत हद तक आज भी दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में गरीब श्रमिक, किसान और स्त्री जीवन का सशक्त चित्रण उनके दर्जनों उपन्यासों में हुआ है, '**सद्गति**', '**कफन**', '**पूस की रात**' और '**गोदान**' में मिलता है। '**रंगभूमि**', '**प्रेमाश्रम**' और '**गोदान**' के किसान आज भी गाँवों में देखे जा सकते हैं साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी योगदान पर प्रकाश डालने हेतु शोधकर्ती द्वारा प्रेमचन्द के हिन्दी साहित्य में योगदान का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

प्रेमचंद के उपनाम से लिखने वाले **"धनपत राय श्रीवास्तव"** हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। उन्हें मुंशी प्रेमचंद व नवाब राय के नाम से भी जाना जाता है। उन्हें उपन्यास सम्राट के नाम से भी नवाजा गया था। इस नाम से उन्हें सर्वप्रथम बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने संबोधित किया था।

प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पूरी शती के साहित्य का मार्गदर्शन किया। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। वे एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा सुधी संपादक थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में, जब हिन्दी में की तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, उनका योगदान अतुलनीय है।

प्रेमचंद भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं जिनके युग का विस्तार सन् 1880 से 1936 तक है। यह कालखण्ड भारत के इतिहास में बहुत महत्त्व का है। इस युग में भारत का स्वतंत्रता–संग्राम नई मंज़िलों से गुज़रा। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, ज़िम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएँ नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ। (गुप्त, प्रकाशचन्द्र (1984) प्रेमचंद भारतीय साहित्य के निर्माता। नई दिल्लीः साहित्य अकादमी।)

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गाँव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। प्रेमचंद के पिताजी मुंशी अजायब लाल और माता आनन्दी देवी थीं। प्रेमचंद का बचपन गाँव में बीता था। वे नटखट और खिलाड़ी बालक थे और खेतों से शाक–सब्ज़ी और पेड़ों से फल चुराने में दक्ष थे। उन्हें मिठाई का बड़ा शौक़ था और विशेष रूप से गुड़ से उन्हें बहुत प्रेम था। बचपन में उनकी शिक्षा–दीक्षा लमही में हुई और एक मौलवी साहब से उन्होंने उर्दू और फ़ारसी पढ़ना सीखा। एक रुपया चुराने पर 'बचपन' में उन पर बुरी तरह मार पड़ी थी। उनकी कहानी,

'कज़ाकी', उनकी अपनी बाल–स्मृतियों पर आधारित है। कज़ाकी डाक–विभाग का हरकारा था और बड़ी लम्बी–लम्बी यात्राएँ करता था। वह बालक प्रेमचंद के लिए सदैव अपने साथ कुछ सौगात लाता था। कहानी में वह बच्चे के लिये हिरन का छौना लाता है और डाकघर में देरी से पहुँचने के कारण नौकरी से अलग कर दिया जाता है। हिरन के बच्चे के पीछे दौड़ते–दौड़ते वह अति विलम्ब से डाक घर लौटा था। कज़ाकी का व्यक्तित्व अतिशय मानवीयता में डूबा है। वह शालीनता और आत्मसम्मान का पुतला है, किन्तु मानवीय करुणा से उसका हृदय भरा है।

प्रेमचन्द की जीवनदृष्टि

प्रेमचन्द की रचनाएँ ही उनके कृति या रचना–व्यक्तित्व की प्रामाणिक साक्ष्य हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि रचनाओं से बाहर के जीवन का उनके व्यक्तित्व से कोई सम्बन्ध नहीं। दरअसल प्रेमचन्द जो जीवन में थे, उससे ज्यादा साफ और गहरे वे रचनाओं में मिलते हैं। उनकी कृतियाँ दो महायद्धों के बीच के विराट मानव–सन्दर्भों की रचनाएँ हैं। ये रचनाएँ रचनाकाल के दृष्य संसार की संघर्षमय जीवन की सच्ची–झूठी गाथाएँ ही नहीं हैं, बल्कि प्रेमचन्द के व्यक्तित्व की परिचय–कथाएँ हैं। प्रेमचन्द का अपना निजी जीवन कहीं–न–कहीं उस बड़े सन्दर्भ से जुड़ा हुआ है। उनके निजी जीवन के बारे में 'कलम का सिपाही' और 'कलम का जादूगर : प्रेमचन्द' जैसी कृतियों से सूचनाएँ मिलती हैं।

उनके लिखे पत्र और उनके बारे में समकालीन लेखक – आलोचकों की सूचनाएँ हमें मिलती हैं वे यह स्पष्ट करती हैं कि भारतीय स्वाधीनता–संग्राम के संघर्ष में लेखक से बाहर की भी हिस्सेदारी प्रेमचन्द ने निभायी थी। वह एक आदमी की हैसियत से 'भागीदार' बनने से सम्बद्ध है। एक आदमी की हैसियत से अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रेमचन्द ने 'कलम के हथियार' से लड़ाई में भाग लिया था। दूसरे क्षेत्रों में उन छोटे पात्रों की हैसियत से भाग लिया था जो भारतीय जन–मानस को उस 'शक्ति' से परिचित कराते हैं जो शक्ति सामाजिक सन्दर्भों को बदलने में समर्थ है।

कृतियों में जो 'अनुभव' प्रेमचन्द ने दिया था, वह अनुभव केवल कलात्मक विलास का अनुभव नहीं था, वह जीवन का 'मानवीय' अनुभव भी था। परन्तु निजी जीवन के अनुभव और एक सार्वजनिक जीवन के अनुभव में फर्क होता है। किसी रचनाकार का निजी जीवन ही रचनाओं में झलकता हो, ऐसा स्वीकार नहीं किया जा सकता। बहुत सारे रचनाकारों के जीवन और उनके सर्जनात्मक कर्म की आधार भूमि में जमीन–आसमान का अन्तर होता है। अनेक उदाहरणों में तो यह एकदम उलटा भी होता है। निजी जीवन का अनुभव 'व्यक्तिगत' रुचि–अरुचि तक में सीमाबद्ध होता है जबकि अनुभवों की विषयगत प्रवृत्ति में ऐसी सीमा नहीं होती। यह विचित्र संयोग है कि प्रेमचंद के निजी जीवन के अनुभवों और रचनाओं के बीच प्रवाहित होने वाले अनुभवों में ज्यादा फर्क नहीं है। बल्कि यह अद्‌भुत समानता है कि प्रेमचन्द के जीवन ही की प्रमुख घटनाएँ या उनके जीवन–काल में हुई प्रमुख घटनाएँ उनकी कथाओं में मिल जाती हैं।

हिन्दी साहित्य

हिन्दी साहित्य हिन्दी भाषा का रचना संसार है। हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा में तलाशी जा सकती हैं। परंतु हिन्दी साहित्य की जड़ें मध्ययुगीन भारत की ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली और मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य में पाई जाती हैं। हिंदी में गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ और इसने अपनी शुरुआत कविता के माध्यम से जो कि ज्यादातर लोकभाषा के साथ प्रयोग कर विकसित की गई। हिंदी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है। गद्य, पद्य और चम्पू। हिंदी की पहली रचना कौन सी है इस विषय में विवाद है लेकिन ज़्यादातर साहित्यकार देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखे गये उपन्यास चंद्रकांता को हिन्दी की पहली प्रामाणिक गद्य रचना मानते हैं। साहित्य अविरल धारा की तरह होता है, जो निरंतर आगे बढ़ता है। उसमें न कोई रुकावट आती हैं और न ही कोई उसे कोई बाधित करता है। समय के साथ–साथ उसमें परिवर्तन आते रहते है और परिवर्तन के अनुरूप साहित्य को नयी प्रवृत्तियाँ, नयी दिशाएँ मिलती है। हिंदी साहित्य का आरम्भ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे–छोटे शासन केन्द्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत् रहा करते थे।

मुसलमानों से भी इनकी टक्कर होती रहती थी। हिन्दी साहित्य के अब तक लिखे गए इतिहासों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखे गए 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' को सबसे प्रामाणिक तथा व्यवस्थित इतिहास माना जाता है। आचार्य शुक्ल जी ने इसे **"हिन्दी शब्द सागर की भूमिका"** के रूप में लिखा था जिसे बाद में स्वतंत्र पुस्तक के रूप में 1929 ई० में प्रकाशित आंतरित कराया गया। हिन्दी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है–

गद्य, पद्य और चम्पू। जो गद्य और पद्य दोनों में हो उसे चम्पू कहते है। खड़ी बोली की पहली रचना कौन–सी है, इस विषय में विवाद है लेकिन अधिकांश साहित्यकार लाला श्रीनिवास दास द्वारा लिखे गये उपन्यास परीक्षा गुरु को हिन्दी की पहली प्रामाणिक गद्य रचना मानते हैं।

मुंशी प्रेमचंद का साहित्यिक जीवन

प्रेमचंद व्यवहार में बहुत ही सरल एवं स्वभाव के दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति थे साहित्य के क्षेत्र में इन्हें बचपन से ही रुचि थी जब उर्दू उपन्यास और लघु कथाएँ लिखने की बात आती है, तो प्रेमचंद का अपना एक विशेष स्थान अवश्य होता है। उपन्यास लिखने की उनकी शैली राजाओं और रानियों की काल्पनिक कहानियों के रूप में शुरू हुई। लेकिन जैसे–जैसे वे अपने आस–पास हो रही घटनाओं के प्रति अधिक जागरूक होते गए। उन्होंने सामाजिक समस्याओं पर लिखना शुरू किया और उनके उपन्यासों ने सामाजिक चेतना और जिम्मेदारी की भावना को जगाने का काम किया था। उन्होंने जीवन की वास्तविकताओं और एक अशांत समाज में आम आदमी द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में बहुत ही वेबाकी से लिखा।

उनका मुख्य ध्यान ग्रामीण भारत और जमींदारों, कर्जदारों आदि के हाथों एक साधारण गरीब ग्रामीण द्वारा सामना किए जाने वाले शोषण पर रहा। उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों की एकता पर भी जोर दिया। उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ गोदान, गबन, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा आदि हैं। उनकी प्रसिद्ध लघु कथाओं में आत्माराम, उधार की घड़ी, बड़े घर की बेटी आदि जैसे लोकप्रिय नाम शामिल हैं। उनके कुछ कार्यों को प्रसिद्ध फिल्म निर्माता सत्यजीत रे द्वारा फिल्मों में भी बनाया गया था।

प्रेमचंद केवल एक मनोरंजक लेखन ही नहीं थे अपितु वे हिन्दू एवं उर्दू भाषा में अपनी दक्षता के लिए भी प्रसिद्ध थे। उर्दू भाषा पर उनकी पकड़ ने उन्हें एक प्रतिभाशाली पत्रकार की प्रतिष्ठा दिलाई। एक पत्रकार के रूप में उनका लेखन उस समय भारत में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन से बहुत प्रभावित था।

अपने लेखन में वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेने की इच्छा व्यक्त करते थे। उन्होंने सोज़–ए–वतन नामक लघु कथाओं की एक पुस्तक संकलित की, जो उस समय की चल रही देशभक्ति से प्रभावित थी। प्रेमचंद के इस कार्य को विद्रोही और साहसी प्रकृति का माना जाता था। यह पुस्तक कई भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए उकसाने में जिम्मेदार थी। इसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार की ओर से कठोर प्रतिक्रिया हुई। सरकार ने सोज–ए–वतन पर कब्जा कर लिया और उसकी सभी प्रतियां जला दीं।

प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य में यथार्थवाद लाया, जिसे उस समय हिंदी साहित्य में क्रांतिकारी विकास माना जाता था; उन्होने पहले अधिकांश लेख, काल्पनिक कहानियो या धार्मिक और पौराणिक कहानियाँ पर लिखे थे। वह एक समाज सुधारक और दूरदर्शी थे। उन्होंने अपनी कहानियों में वास्तविकता और यथार्थवादी स्थितियों का भरपूर प्रयोग किया है। उनके सभी पात्र वास्तविक समस्याओं वाले वास्तविक लोग थे। वे उस समय के आसपास भारत में मौजूद सामाजिक बुराइयों के बारे में लिखते थे। इन सामाजिक बुराइयों में शामिल हैंः दहेज, गरीबी, उपनिवेशवाद, भ्रष्टाचार, जमींदारी, आदि थे।

मुंशी प्रेमचंद की प्रमुख कहानियाँ		मुंशी प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यास	
i.	दुनिया का सबसे अनमोल रतन	i.	रंगभूमि (1925)
ii.	सप्त सरोज	ii.	निर्मला (1927)
iii.	प्रेम–द्वादशी	iii.	गबन (1931)
iv.	समरयात्रा	iv.	कर्मभूमि (1932)
v.	मानसरोवर : भाग एक व दो	v.	गोदान (1936)
vi.	कफन	vi.	हमखुर्मा व हमसवाब
vii.	नवनिधि	vii.	सेवासदन (1918)
viii.	प्रेमपूर्णिमा	viii.	बाजारे–हुस्न (उर्दू)

ix.	प्रेम–पचीसी	ix.	प्रेमाश्रम (1921)
x.	प्रेम–प्रतिमा	x.	मंगलसूत्र प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है।

मुंशी प्रेमचंद्र के साहित्य की विशेषताएँ

प्रेमचन्द की रचना–दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। अपनी कहानियों से प्रेमचंद मानव–स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं। 'बड़े घर की बेटी,' आनन्दी, अपने देवर से अप्रसन्न हुई, क्योंकि वह गंवार उससे कर्कशता से बोलता है और उस पर खींचकर खड़ाऊँ फेंकता है। जब उसे अनुभव होता है कि उनका परिवार टूट रहा है और उसका देवर परिताप से भरा है, तब वह उसे क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत करती है। इसी प्रकार 'नमक का दारोग़ा' बहुत ईमानदार व्यक्ति है। घूस देकर उसे बिगाड़ने में सभी असमर्थ हैं। सरकार उसे, सख्ती से उचित कार्रवाई करने के कारण, नौकरी से बर्ख़ास्त कर देती है, किन्तु जिस सेठ की घूस उसने अस्वीकार की थी, वह उसे अपने यहाँ ऊँचे पद पर नियुक्त करता है। वह अपने यहाँ ईमानदार और कर्तव्यपरायण कर्मचारी रखना चाहता है।

इस प्रकार प्रेमचंद के संसार में सत्कर्म का फल सुखद होता है। वास्तविक जीवन में ऐसी आश्चर्यप्रद घटनाएँ कम घटती हैं। गाँव का पंच भी व्यक्तिगत विद्वेष और शिकायतों को भूलकर सच्चा न्याय करता है। उसकी आत्मा उसे इसी दिशा में ठेलती है। असंख्य भेदों, पूर्वाग्रहों, अन्धविश्वासों, जात–पांत के झगड़ों और हठधर्मियों से जर्जर ग्राम–समाज में भी ऐसा न्याय–धर्म कल्पनातीत लगता है। हिन्दी में प्रेमचंद की कहानियों का एक संग्रह बम्बई के एक सुप्रसिद्ध प्रकाशन गृह, हिन्दी ग्रन्थ–रत्नाकर ने प्रकाशित किया। यह संग्रह 'नवनिधि' शीर्षक से निकला और इसमें 'राजा हरदौल' और 'रानी सारन्धा' जैसी बुन्देल वीरता की सुप्रसिद्ध कहानियाँ शामिल थीं।

हिन्दी उपन्यास परम्परा में मुंशी प्रेमचंद्र का योगदान

हिन्दी में उपन्यास साहित्य का विकास अंग्रेजी उपन्यासों के प्रभावस्वरुप हुआ। आधुनिक हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं की भांति इसका विकास भी भारतेंदु युग से होता है। पर इस विधा का पूर्ण परिपाक प्रेमचंद की रचनाओं में मिलता है। प्रेमचंद के बाद हिंदी उपन्यास की साहित्य–यात्रा विविधमुखी है और आज भी यह गद्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। भारतेंदु युग में हिंदी–उपन्यास का प्रारंभ बंगला उपन्यासों के अनुवाद के रूप में हुआ। भारतेंदु का 'पूर्णप्रकाश' और 'चंद्रप्रभा' उपन्यास अनुवाद ही है। हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा–गुरु' माना जाता है, लेकिन आचार्य रामचंद्र शुक्ल श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' को हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। ये दोनों सामाजिक उपन्यास हैं। इनके बाद भारतेंदु की अधूरी कृति 'आपबीती–जगबीती' को मौलिक उपन्यास माना जाता है। भारतेंदु युग के प्रतिष्ठित उपन्यासकारों में जगमोहन सिंह (श्यामा स्वप्न), बालकृष्ण भट्ट (नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान), देवी प्रसाद उपाध्याय (सुन्दर सरोजिनी), राधाकृष्ण दास (निःसहाय हिन्दू), किशोरीलाल गोस्वामी (लवंगलता, कुसुम कुमारी), बालमुकुंदगुप्त (कामिनी) आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इन सामाजिक उपन्यासों के अतरिक्त इस युग में कुछ ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे गए, पर इनमे इतिहास कम ऐयारी अधिक है। ब्रजनंदन सहायकृत 'लालचीन' और मिश्रबंधुओं का 'वीरमणि' इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। लालचीन गयासुद्दीन बलबन के एक गुलाम की कहानी है और वीरमणि, अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ पर की गयी चढ़ाई का कल्पना–मंडित विवरण है। इस युग में मौलिक उपन्यासों से कही अधिक अनुदित उपन्यासों की भरमार रही। मौलिक और अनूदित उपन्यासों की यह परम्परा भारतेंदु युग से द्विवेदी युग तक फैली चली आती है। इन उपन्यासों के बाद हिंदी में तिलिस्मी और जासूसी उपन्यासों की धूम–सी मच गयी। देवकीनंदन खत्री ने चंद्रकांता, चंद्रकांतासंतति तथा भूतनाथ (अपूर्ण) जैसे जासूसी और ऐयारी से भरे उपन्यास लिखे। इन अद्भुत उपन्यासों को पढ़ने के लिए कितने ही लोगो ने हिंदी पढ़ी। देवकीनंदन खत्री के पुत्र दुर्गाप्रसाद ने अपने पिता के कार्य को आगे बढ़ाया– रक्तमण्डल, लालपंजा, प्रतिशोध, सफेद शैतान आदि इनकी कृतियाँ हैं। गोपालराम गहमरी, देवी प्रसाद शर्मा, जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी तथा किशोरीलाल गोस्वामी आदि ने इस प्रकार के उपन्यास लिखे। प्रेमचंद और जासूसी उपन्यासों की कड़ी के रूप में में हरिऔध और लज्जाराम मेहता को लिया जा सकता है। हरिऔध के 'ठेठ हिंदी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूल' उपन्यास तथा मेहता के 'आदर्श हिन्दू' और 'हिन्दू गृहस्थ' उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

संक्षेप में प्रेमचंद–पूर्व के उपन्यास विषयवस्तु, तत्व और भाषा सभी दृष्टियों से बिखरे हुए और अनेकरूपता लिए हुए है। अधिकतर उपन्यासों की रचना सामाजिक उपदेशों या फिर कुतूहलवर्धन की ही दृष्टि से हुई। सभी उपन्यासों में कथोपकथन शैली का आभाव और वर्णनात्मकता की प्रधानता है।

निष्कर्ष

यह निश्चित ही है कि प्रेमचन्द 'मनुष्यता' के अमर कथाकार थे। जब तक समाज में अनीति, अन्याय, अत्याचार और अविचार है तब तक इनकी कृत्तियाँ मशाल का काम देंगी और जब मुक्ति के प्रकाश से मनुष्यता का मुख उज्ज्वल होगा, तब वे शोषित–पीड़ित जनता की जीवन गाथा से उसके जीवन व्यापी संघर्ष से हमारा परिचय कराती रहेंगी। प्रेमचन्द का जीवन तपस्वियों के सदृश था साहित्य–सेवा के लिए ही उनका जीवन था। साहित्य के लिए उन्होंने जीवन पर्यन्त लेखनी को अलग न किया। वे एक सफल तथा सच्चे उपन्यासकार माने जाते हैं। इस बात का निर्णय उनके साहित्य अथवा उनके उपन्यासों से हो जाता है।

प्रेमचन्द चतुर्दिक व्याप्त समाज में घटित और उसमें संलिप्त व्यक्तियों से प्रेरित होकर ही साहित्य सृष्टि करते है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में सामाजिक जीवन अपने समस्त सम्बन्धों, जटिल प्रश्नों और समस्याओं, आशा–आकांक्षाओं के साथ उभरा है, इसीलिए उनके पात्र विषेशतः सामाजिक या वर्गीय पात्र है। लेखक इन पात्रों की विषेशताओं को खूब उबारता है, उनसे उनका व्यक्तित्व निर्मित करता है और परिस्थितियों के प्रवाह में उठते–गिरते उस पात्र की मनःस्थितियों का आकलन करता है। लेखन ने उन पात्रों के सामाजिक रूप और सामाजिकता से सम्बन्धित मनःसत्यां के उद्घाटन पर विशेष बल दिया हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

- प्रेमचंद,, समालोचक, पृष्ठ 25 (1925)
- यादव चित्रा (2019), मुंशी प्रेमचन्द्र का हिन्दी साहित्य मे योगदान– एक समीक्षा, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, वॉल्यूमः 16, अंकः 5 डीओआईः 10.29070/जेएएसआरएई
- देवी, बाला (2018), हिन्दी उपन्यास और भारतीय समाज का मध्यवर्ग, जर्नल ऑफ़ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, खंडः14, अंकः 2, डीओआईः 10.29070/जेएएसआरएई
- प्रो. चन्द्रवंशी डी.पी. (2015), "हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द्र का योगदान" रिसर्च जर्नल ऑफ़ ह्यूमेनिटीज़ एंड सोशल साइंसेस।
- गुरुचैन सिंह (2007), दि न्यू मिडल क्लास इन इंडियाः ए बायोग्राफिकल एनालिसिस, रावत पब्लिकेशन, पृ. 19, जयपुर
- लाल बहादुर वर्मा (1998), यूरोप का इतिहास, खंड –1, प्रकाशन संस्थान।
- दास श्यामसुंदर (1982), भारतीय मध्यवर्ग, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ . 58
- संजय जोशी, फ्रैक्चर्ड मार्डनिटी, ओ यू पी, 2001, पृ. 5